## Choice of Technological.

आर्थिक विकास के लिए किस तकनीक को अपनाई जाए यह विवादस्पद है। अर्थशास्त्रियों का मत है कि प्रविधि के चुनाव के लिए देश की वर्तमान परिस्थिति एवं समस्याओं को ध्यान में रखना चाहिए। चुनाव के इस बिन्दु तकनीकि या प्राविधि के स्वरूपों की व्याख्या आवश्यक है।

वस्तुत: प्रविधि दो प्रकार की होती है (I) पूँजी प्रधान प्रविधि (II) श्रम प्रधान प्रविधि

(I) पूँजी प्रधान प्रविधि → इस विधि में पूँजी की अधिक और श्रम की कम आवश्यकता पड़ती है। इस तकनीक में अधिकाधिक पूँजी का प्रयोग किया जाता है। इसका समर्थन Mowric dobb, H. Leivens Stin Paul barm, Hirsman and Galosoul ने किया है। इनलोगो के अनुसार बढ़ी हुई तकनीकी में अधिक पूँजी लगाने से उत्पादन क्षेत्र का विस्तार होता है। Galosoual ने इसे Modern Technology कहा है और समर्थक किया है कि आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने का पूँजी प्रधान एकमात्र विकल्प Particulars is the face of gross book orderness brings largly upon the introduction of modern technology as large a ~~social~~ scale as posible. Capital, intensive technic अथवा Modern technology को निम्न रेखा चित्र में समझा जा सकता है।

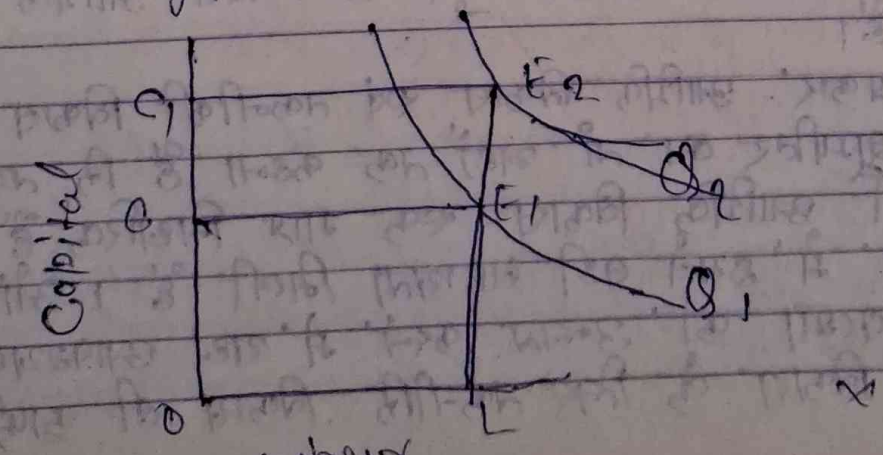

पूंजी और श्रम का अनुपात OC+OL है जो $L_1$ - Technological level पर उत्पादन $OLE_1C$ के बराबर हो रहा है। जब Technology में परिवर्तन होता है और वह $Q_1$ से बदलकर $Q_2$ हो जाती है तो श्रम OL मात्रा यथावत रखते हुए पूंजी की मात्रा OC से $OC_1$ बढ़ा दी गई है जिससे कुछ उत्पादन में $CE_1\ E_2C_1$ के बराबर वृद्धि हुई है। इस वृद्धि में केवल पूंजी की मात्रा को बढ़ाया गया है और श्रम की मात्रा को बचाया गया है। इसलिए इसे Labour saving Device कहते है। यह तकनीक वैसे देशों में उपयुक्त होता है जहां श्रम की मात्रा सीमित और पूंजी का आधिक्य होता है। इस तकनीक के चुनाव के पक्ष में निम्न तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं।

(1) Rapid rate of Economic growth → इस तकनीक से आर्थिक विकास में तीव्र वृद्धि होती है। ऐसे तकनीक से उत्पादकता से वृद्धि होती है। अधिक पूंजी निवेश के लिए प्रतियोगिता होती है। क्योंकि लाभ की प्रत्याशा में विनियोग बढ़ता है। बचत की मात्रा भी बढ़ती है। जो पूंजी-निर्माण में वृद्धि होती कर आधारभूत संरचना का निर्माण करती है, कम लागत पर अधिक उत्पादन होता है।

(II) Higher standard of living → पूंजी प्रधान तकनीक के अंतर्गत जब उत्पादन और उत्पादकता दोनों में वृद्धि है। तो कार्य करने वाले श्रमिकों की मजदूरी भी बढ़ती है। इससे दोहरा लाभ होता है - पहला यह कि रहन-सहन के स्तर में वृद्धि होती है और दूसरा यह कि अच्छे किस्म की वस्तुएं कम मूल्य पर अधिक मात्रा में मिलने लगते है। स्पष्ट है कि उपभोग और विनियोग दोनों दृष्टिकोण से यह तकनीक श्रेष्ठ माना जाता है।

(III) Increase in employment opportunity
पूंजी प्रधान तकनीक तत्काल तो नहीं लेकिन एक लम्बी अवधि के उपरांत भारी मात्रा में रोजगार के अवसरों का निर्माण करती है। इससे औद्योगिकरण की गति तेजी होती है जो सभी क्षेत्रों में प्रकम्पीत विकास (vibrant growth) की परिस्थितियां उत्पन्न होती है।

(IV) Increase in the supply of skilled and efficial labour
पूंजी प्रधान तकनीक श्रमिकों की क्षमता एवं कुशलता में वृद्धि करती है। नये मशीनों के प्रयोग और उत्पादन के नई तकनीक के लागू होने से Training and management की ~~व्यवस्था~~ व्यवस्था करनी पड़ती है। Man Power Planning पूंजी के अनुसार की जाती है। इससे उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि होती है।

(v) Less of obsolescence and deprecience →
पूँजी प्रधान तकनीक अत्यंत आधुनिक मशीनें (तकनीक) की ओर प्रेरित करती है आधुनिक तकनीक में आधुनिक मशीनें लगाई जाती है, पुरानें मशीनों की क्षमता में वृद्धि की जाती है। इससे मशीनों की जिरनसिरनता में कमी आती है, घिसावट व्यय पर कम खर्च करना पड़ता है। अन्तत: लागत कम होती है।

पूँजी प्रधान तकनीक के संदर्भ में उपर्युक्त तर्क जो दिए गए हैं। वो विकसित देशो के संदर्भ में भले ही अनुकूल हो किन्तु अधिक जनसंख्या वाले पूँजीविहिन अर्द्ध-विकसित देशो के लिए प्रतिकूल सिद्ध होगा। अर्द्धविकसित देशो में पूँजी का अभाव रहता है और पूँजी के लिए सहायता देने वाली संचार-यातायात परिक्षण व्यवस्था आदि की भी कमी रहती है। यदि इस तकनीक को अपनाया जाता भी है तो ये देश-विदेशी पूँजी का गुलाम हो जाते है। अत: अधिकांश अर्थशास्त्री पूँजी-प्रधान तकनीक के बदले श्रम-प्रधान तकनीक की सिफारिश करते है।